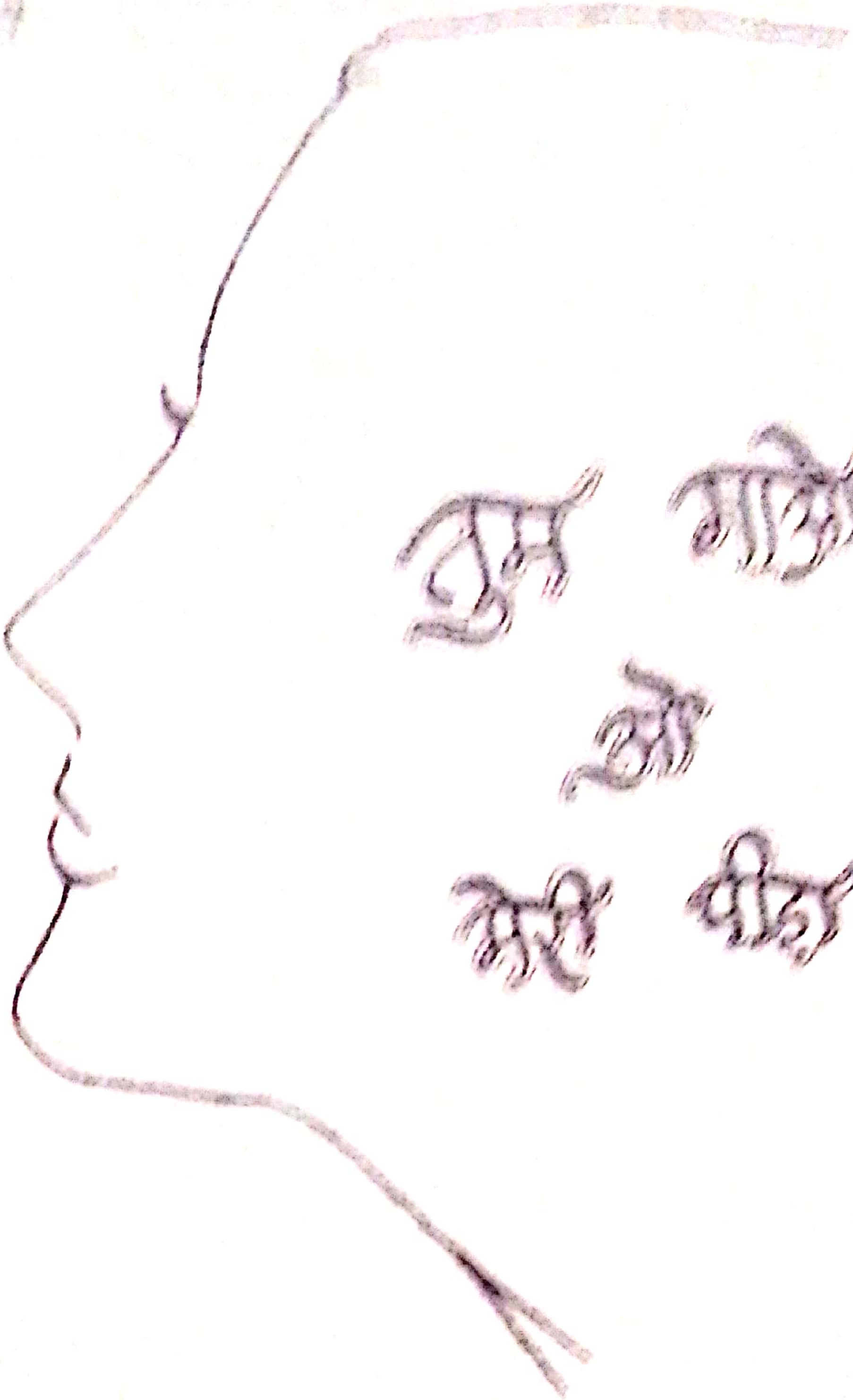

तुम गाओ
औ
मेरी पीड़ा

[illegible]

Scanned with OKEN Scanner

तुम गाओ ओ मेरी पीड़ा !
(सन् १९९५-९६ के गीतों का संकलन)

मोह टूटे भी
सुबुधि का
मगर आँखें
कहाँ वे
खोज पायें
नेह जो कि
जागरण के
पाश में भी
गुनगुनाने को
अधर पर
गीत की पंक्ति
हो कोई
इसलिये तो
मूँद पलकें
मन मधुर भ्रम
पालता है

- डॉ. छाया शर्मा

♦ श्रुति प्रकाशन : प्रथम कृति तुम गाओ, ओ मेरी पीड़ा!
(गीत-संकलन)

♦ प्रथम संस्करण : 1996 © प्रो. छाया शर्मा
सर्वाधिकार सुरक्षित

♦ मूल्य : 90/-

♦ प्रकाशक : श्रुति प्रकाशन
1411, नेपियर टाउन,
जबलपुर - 482001

♦ आवरण एवं चित्रांकन : एस.मनस्वी

♦ मुद्रक : सूर्या ऑफसेट, प्रिन्टर्स
एच-6, दर्पण कॉलोनी, ठाटीपुर, ग्वालियर।
फोन : 341096, 340737

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

तुम से तुम तक..... 1

1. बस तुम्हारे आसपास
2. निर्झर बहते कहीं ठिठककर
3. तुम एक मीठा सपना मेरा
4. परस तुम्हारे संजो-संजो कर
5. चाह कर बस एक तुम्हारा संग
6. ठिठक गई जो द्वार तुम्हारे
7. वह तुम्हारी बेरुखी
8. कभी तो पुकारो जरा अपनेपन से
9. मैंने जीवन को गिरवी रख
10. कैसे लांघूँ लक्ष्मण रेखा

गहराती रातें..... 13

1. आँखों ही आँखों में बीत गये
2. रातों तरसती हुई नींद को
3. क्यों रातों का दर्द भला
4. सपनों ने कैसा भरमाया
5. बहुत हो चुकी मीठे सपनों की बात
6. जी भर के सोना है, होने तक भोर
7. अब है बस सुबह का खामोश इंतज़ार
8. उनका अनबोला और मेरी ये बातें

उमड़ते बादल..... 23

1. क्या है जरूरी कि उमड़ें जो बादल
2. स्वाति में जनमे हम
3. यह कैसा फागुन
4. प्यासी आँखों में बसता है
5. गूंगा है आँखों में कैदी सावन
6. ये कैसे गहरे बादल
7. काली घटाओं में हरियाला सावन
8. ओ मेरे पर्वत महान्!

उदास लमहे..... 33

1. हैं दिन अनमने

Scanned with OKEN Scanner

2. न गुनगुनी सी यादें
3. मन मेरा ऐसा अनमना
4. ओ मेरे मन!
5. अब मैं चुप हो वीरानों में
6. कितना बांधोगे इस आहत मन को
7. तुम्हारे न होने से इतना हुआ है
8. अपनी चाहों के जंगल में

अनबूझी यादें.....

1. अनबूझी यादों के गहराते साये
2. उतरे ही होंगे आँगन में तेरे
3. मन रे तू मत जा सुधियों के गाँव
4. खुद ही करके दरवाजे बंद
5. कितना कठिन है तुम्हें भूल पाना
6. आया है ऐसे यादों का मौसम
7. हम तुम्हें भूले नहीं हैं
8. बीते उत्सव के आसव की

क्यों भला.....

1. जिसकी शाखाओं में टाँके बैठे थे
2. बहते हुये पानी पर
3. बांध तोड़ कर क्यों बहा
4. उमर पक गई चलते-चलते
5. अपने सुर और गीत मैंने
6. चाहत में चाहा, जब भी मनचाहा
7. क्यों तुमने वह बात बढ़ाई
8. साँस लेकर भी
9. फागुन जो पहले हँसता था
10. क्यों मैं कल को जीती हूँ

उमर के पाठ.....

1. उमर ने पढ़ाये कितने पाठ
2. मन मेरे तू
3. गुमनाम अंधेरों से
4. चलो चल सको तो
5. मैंने खुद खींची हैं
6. आँखो पर करके

Scanned with OKEN Scanner

प्रोफेसर डॉ (श्रीमती) छाया शर्मा. एम.ए.पी एच.डी. (संस्कृत)

जन्म : 11 मार्च 1947 को अकोला के तेलुगुभाषी दक्षिण भारतीय परिवार में।

शिक्षा : सम्पूर्ण शिक्षा आद्योपान्त राष्ट्रीय छात्रवृत्तियों द्वारा सम्पन्न।

स्नातक (1966) एवं स्नातकोत्तर (1968) स्तर पर सर्वाधिक अंक प्राप्त कर वि.वि.कला संकाय स्वर्णपदक अर्जित।

1960 से कविता, गीत, गद्यकाव्य, कथा, कहानी, लेखन तथा धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान आदि पत्र-पत्रिकाओं मेंप्रकाशन।

1970 से निरन्तर म.प्र.शासकीय सेवा में महाविद्यालयीन प्राध्यापक पद पर कार्यरत।

नृत्य, संगीत, अभिनय में रुचि।

लेखन एवं निर्देशन :
1. नृत्यनाटिका त्रिगुणात्मिका प्रकृति (1995)
2. गौरी पूजा की प्रासङ्गिकता (1996)

रंगसंस्था नाट्यायन की सलाहकार समिति की मनोनीत सदस्या।

आकाशवाणी ग्वालियर द्वारा चिन्तन, एवं वार्ताओं का सतत् प्रसारण। परिचर्चाओं में भागीदारी।

सम्प्रति : शा. कमला राजा कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय ग्वालियर में संस्कृत की प्राध्यापक।

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner